

SHRI B. V. DESAI : These are all the remedies of course, but we are seeing floods and drought are our every-year features. There are certain Plans and if our Agriculture Minister would care to take them out and see that they are implemented it will be very helpful, that is, the flood control measures inter-related to drought-prone areas, to see if the excess water of the flood-affected areas could be diverted to drought-prone areas so that both the situations can be brought under control. And in that direction, there are many plans and will the hon. Minister assure us that he will take up at least a portion of it or a start will be made in this regard ?

PROF. N. G. RANGA : Rajasthan Canal.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY : Ganga-Kaveri link.

RAO BIRENDRA SINGH : It is all an inter-related one.

I made a mention in my statement about instructions being issued through Irrigation Ministry in this regard. Meetings are held from time to time with the State Governments concerned for taking up extension of irrigation projects and for early implementation. The Rajasthan Canal also only a few days back was discussed by the Chief Minister and other Ministers of Rajasthan with the Finance Minister in my presence and we are trying to help Rajasthan to find more funds for early completion of the Rajasthan Canal. That is all I can say.

PROF. N. G. RANGA : What about Narmada project ?

SOME HON. MEMBERS : *rose.*

MR. SPEAKER : We have a discussion later on.

Shri Anantha Ramulu Mallu.

SHRI ANANTHA RAMULU MALLU
Question No. 327.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY :
Rao Sahib.

राव बीरेन्द्र सिंह . आज मेरे क्वेश्चन वाले मारे मोजूद हैं ।

एक माननीय सदस्य : आप तो यही चाहते थे ।
श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आज शाम को
..... है ।

राव बीरेन्द्र सिंह : चार बजे जो अलग से डिस्कशन हुआ रहा है, आप तो कह रहे थे कि वह पोस्टपोन हो रहा है ।

PROCUREMENT OF WHEAT

*327. SHRI ANANTHA RAMULU MALLU : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the wheat procurement has been very tardy and the procurement of adequate quantity is not likely to be achieved;

(b) if so, the details regarding the reasons therefor and the names of the States where procurement of wheat has not been satisfactory; and

(c) the anticipated shortfall in the procurement and its likely impact on the buffer stock and the public distribution system vis-a-vis its prices ?

THE MINISTER OF AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT AND CIVIL SUPPLIES (RAO BIRENDRA SINGH) : (a) and (b) No, Sir. During the current marketing season, as reported upto 28th July, 1982, a quantity of 7.64 million tonnes of wheat has been procured as against 6.45 million tonnes in the corresponding period of the last season. However, in Bihar, Madhya Pradesh and Uttar Pradesh the wheat procurement is lower than the last year.

(c) The higher level of wheat procurement has resulted in the replenishment of stocks. This will help in maintaining the public distribution system, which has a sobering effect on prices.

SHRI ANANTHA RAMULU MALLU : I would like to know from the hon. Minister as to what are the reasons for short procurement in Bihar, Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. Is it because of shortfall in production or because of the laziness in the procurement agencies ? Or has it something to do with the unremunerative prices given to the farmers ?

RAO BIRENDRA SINGH : Prices given to the farmers are the same all over the country and there has been the second best procurement of wheat this year.

We have already procured 7.6 million tonnes of wheat as against the previous highest procurement achieved of 8 million tonnes in 1978-79. But, the total procurement of foodgrains this year both rice and wheat put together has exceeded even the previous highest figure of 1978-79. Wheat and rice put together so far procured during this year is 14.8 million tonnes as against 14.3 million tonnes in the full year 1978-79.

Our achievement is a record achievement in spite of some damage to the wheat crops due to untimely rains. Punjab, Haryana and other States which have been helping us in procurement have done so well that it cannot be said that on account of unremunerative prices in Bihar, Madhya Pradesh and other places procurement has been less than that of last year.

I can agree that there might have been some shortfall in production on account of deficient rainfall and drought conditions in parts of these States which have not procured well. But the main reason probably is the lack of interest on the part of the State Governments in the procurement drive.

MR. SPEAKER : Mr. G. Y. Krishnan.

SHRI ANANTHA RAMULU MALLU : I have my second supplementary, Sir.

MR. SPEAKER : What is the second one? There will be a discussion today on this very subject.

SHRI ANANTHA RAMULU MALLU : My second supplementary is : is it also a fact that the farmer are getting a better price compared to the procurement price and is there also any target fixed for this year for the procurement of wheat?

If so what is the achievement?

RAO BIRENDRA SINGH : No targets were fixed Statewise. But, we have been trying to maximise the procurement. If the farmers get a higher price from the

agencies other than Government agencies, they are allowed to sell it to anybody they like. But it is mainly with a view to stabilise the food prices and to help the farmers to get a remunerative return for their produce that this Policy has been adopted by Government. Farmers appreciated it. That is why so much wheat has been sold to Government agencies.

श्री मलिक एम० एम० ए० खाँ : अध्यक्ष महोदय, चूंकि मंत्री महोदय ने प्रोक्वोरमेंट प्राइस 142 रुपये रखी थी, जिस की वजह से, आप बतला रहे हैं, कि रिवाइज प्रोक्वोरमेंट हुआ है। लेकिन ऐसी कौन सी वजह हुई—जब कि किमान के पास में गेहूँ होर्ड्स के पास, सरकारी एजेन्सिज या प्राइवट एजेन्सिज में पास चला गया तो उस की डिस्ट्रीब्यूशन कास्ट गवर्नमेंट ने बढ़ा दी, जिस में कन्ज्यूमर के ऊपर बहुत बड़ा बोझ पड़ा है, क्या आप इस की वजह बतलायेंगे?

श्री जगपाल सिंह : आज के पेपर्स में आया है कि देसी गेहूँ 280 रुपये प्रति क्विंटल बिक रहा है।

राज बोरेंद्र सिंह : अध्यक्ष महोदय से कहिये, वह इजाजत देंगे तो आप का जवाब भी दे दंगा।

अध्यक्ष महोदय : मुनी-मुनाई बात का जिक्र नहीं किया करते हैं। आप मलिक साहब के सवाल का जवाब दीजिये।

राज बोरेंद्र सिंह : गेहूँ की ईशू प्राइस सिर्फ इतनी बढ़ाई गई है जितनी कीमत किमान के गेहूँ की प्रोक्वोरमेंट के लिये इस माल बढ़ाई गई है 130 रु० से 142 रु०...

श्री सतीश अग्रवाल : उस से ज्यादा है।

राज बोरेंद्र सिंह : ओवरहेड चार्ज तो शुमार होते हैं। आप तो दुकानदारी की बात जानते हैं—ये चार्ज भी उस में शामिल होते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह जानते हैं, लेकिन ढण्डी आप मार रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : कहीं यह गुरु-मंत्र तो नहीं सिखला दिया।

एक माननीय सदस्य : हो सकता है, सीख गये हों।

राज बोरेंद्र सिंह : पहले जितनी सब्सिडी एक क्विंटल गेहूँ के ऊपर थी, सब्सिडी उसी के मुताबिक अब भी करीब-करीब चल रही है।

श्री स्तीस ~~काव्या~~ : 35 करोड़ कम हो गया है ।

राव बोरेन्द्र सिंह : वह इसलिए थोड़ा कम है, क्योंकि मिल्स की कीमत ज्यादा कर दी । मिल्स की जो गैरों की कीमत थी, उससे कुछ बचत हो गई, लेकिन कन्स्यूमर्स के लिए जो कीमत बढ़ाई गई है, उसमें गवर्नमेंट की सलिसडी उतनी की उतनी अगले साल भी करीब-करीब रहेगी । यह 12 ६० कीमत बढ़ाने के बाद मंडी चार्ज और दूसरे जो खर्चे हैं, उनको मिलाकर 15 ६० करीब-करीब पड़ता है । कन्स्यूमर्स के लिए उतना ही बढ़ाया गया है, ज्यादा नहीं बढ़ाया गया है ।

प्रो० अजित कुमार मेहता : अध्यक्ष महादय, मंत्री जी ने कहा कि बिहार में भी बरसात हुई है, लेकिन मैं समझता हूँ कि शायद बिहार की फसल के बारे में मंत्री जी को ज्ञान नहीं है । यह ...

राव बोरेन्द्र सिंह : पिछले मवाल पर चले गए हैं

अध्यक्ष महोदय : बात ही पिछली कर रहे हैं, आप तो कल की बात कर रहे हैं ।

प्रो० अजित कुमार मेहता : उन्होंने यह कहा कि बिहार में बरसात हो रही है । क्या आपको पता है कि बरसात कब हुई, जबकि खरीफ के लिए बिचड़े बगैर सब मार जा चुके हैं । इन बातों को ध्यान में रखते हुए बिहार सरकार ने अतिरिक्त आबंटन की मांग की थी, क्योंकि उनके कोटे में कटौती हुई है । प्रोक्वोरमेंट अधिक होने की वजह से आपके पास भण्डारन अधिक होगा, तो क्या आप बिहार सरकार की अतिरिक्त मांग को पूरा करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय : आबंटन की बात तो इस मवाल में नहीं है ।

... (व्यवधान) ...

प्रो० अजित कुमार मेहता : जवाब में है ।

श्री राम विलास पासवान : चला दीजिए, चला दीजिए ।

... (व्यवधान) ...

अध्यक्ष महोदय : हाँ, मिनिस्टर तगड़ा देखकर, आप चलाना चाहते हैं, तो चलवा दीजिए ।

... (व्यवधान) ...

प्रो० अजित कुमार मेहता : जवाब दिला दीजिए, बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

राव बोरेन्द्र सिंह : बात प्रोक्वोरमेंट की है, वे इणू पर आ गए हैं ।

प्रो० अजित कुमार मेहता : क्या आप बिहार की मांग को पूरा करेंगे ?

राव बोरेन्द्र सिंह : बिहार सरकार की जितनी मांग है, वह पूरी की जाएगी, इस बात का मैं आश्वासन नहीं दे सकता हूँ । क्यों कि हमारा क्वाल है कि सारी स्टेट्स बढ़ा चढ़ाकर मांग रखती हैं... (व्यवधान)... हम अन्दाजा लगाते हैं कि कितना अनाज स्टेट के लिए जरूरी है ।

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : सारी स्टेट गवर्नमेंट्स को आप डिमिम कर दीजिए, क्योंकि ये गड़बड़ काम करती हैं ।

राव बोरेन्द्र सिंह : लोगों की बनाई हुई सरकार है, आपके कहने से नहीं टूट सकती है ।

प्रो० अजित कुमार मेहता : मंत्री जी ने मान लिया है कि बिहार में कमी है और इसी कारण प्रोक्वोरमेंट कम हुआ है । कम से कम वहाँ जो कमी है, उसको तो आप पूरा कर दीजिए ।

राव बोरेन्द्र सिंह : मैंने कहा है कि बारिश से हालात सुधर गए हैं । जो कमल पिछली बाकी रह गई है, उसको भी इस बारिश से फायदा होता है । अभी भी जो बारिश हो रही है, हालांकि यह लेट है, लेकिन कई दफा देखा गया है कि जो लेट बारिश होती है, उससे खरीफ भी अच्छी बन जाती है ।

(व्यवधान)

प्रो० अजित कुमार मेहता : हमारे ताँ सारे बिचड़े मारे गए हैं ।

... (व्यवधान) ...

राव बोरेन्द्र सिंह : न उम्मीद होने की बात नहीं है । अब भी आगे चावल की फसल लगाई जा सकती है ।

DEVELOPMENT OF TRACTOR OPERATED SUGAR-CANE HARVESTING MACHINE

329. DR. KRUPASINDHU BHOI : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether tractor operated sugarcane harvesting machine has been designed and developed by the engineers of the Institute of Sugarcane Research, Lucknow;